Research Paper

Volume : 2 | Issue : 10 | October 2013 • ISSN No 2277 - 8179

साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल व्यक्तित्व एवं कृतित्व
Sahitykar Shreelal Shukla Vyaktitva Evam Krutitva

Literature

KEYWORDS : श्रीलालशुक्ल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्रीलाल षुक्ल

प्रास्ताविक– **(Introduction)** साहित्यकार साहित्यकार श्रीलाल षुक्ल का जीवन परिचय जानना एक औचित्यपूर्ण होगा उनका जन्म उत्तरप्रदेष के लखनऊ जिले के मेा. हनलाल गंज कस्बे के नजदीक अंतरौली मे गांव 31 डिसेंबर 1925 का सुसंस्कृत किसान परिवार में हुआ । पिताजी के बारे में स्वयं श्रीलाल षुक्लजी लिखते है कि, "मेरे पिता को निर्धनता, सदाचरण और साहित्य तथा संगीत का संस्कार विरासत में मिला" षुक्लाजी के पिताजी पं. गदाधर षुक्ल संस्कृत, हिंदी, उर्दु और फारसी भाशा के प्रकाण्ड पंडित और संगीत प्रेमी थे । कुछ साल तक वे पास के स्कुल में उन्होंने अध्यापक का कार्य किया। किसी कारणवर्ष वहाँ इस्तीफा देकर एक छोटे किसान होकर रह गए । उन्होंने 55–56 साल की उम्र में ही सितार बजाना भी सिखा । श्रीलाल षुक्ल के जन्म के कुछ ही महा पर्व उनकी मृत्यू हुई । पिता पं ब्रजकिशोर षुक्ल को हिंदी, उर्दु एवं संस्कृत का काम चलाऊ ज्ञान तथा कसरत और संगीत का भी षौक था। उन्हें हिंदी और संस्कृती की बहुत सी कविताएँ याद थी । जिनमें से अधिकांष को उन्होंने अपने पुत्र बचपन में धाती के रुप में दिया था । पिताजी का कोई व्यवसाय नही था । वे जीवन के पूर्वार्ध्द में अपने पिता पर बाद में फिर कुछ वर्श भाग्य तथा लगातार कम होती हुई खेती पर और जीवन के उत्तरार्ध में अपने बडे पुत्र पर निर्भर थे । सन 1945 में जब श्रीलाल षुक्ल प्रयाग विष्वविद्यालय में बी.ए. के छात्र थे, तो तब उनके पिता का देहांत हुआ। माता ग्रामीण जीवन से संबंधीत थी । ग्रामीण परिवषु में रहकर भी उन्हे पढने लिखने का मौका मिल गया था और उन्हें हिंदी और गणित की सामान्य जानकारी थी । साधन हीन होते हुऐ भी वे उदारता और उत्साह की मूर्ति थी। जिंदगी के बहुरंगी पक्षो के प्रति उनका उत्साह भी कम नही हुआ । श्रीलाल षुक्ला जी के साथ रहते वह क्रिकेट आरै बॅडमिंन का मॅच बडी दिलचस्पी से देखा करती थी । उन्हे सिनेमा देखते और गाना सुनने का बहुत षौक था । श्रीलालजी ने उन्हे 57 साल उम्र में रायफल चलाना सिखाया था । उन्हे लेखक से अच्छा खासा निषाना भी था । सन 1960 मे उनके कनिश्ठ पुत्र भवानी षंकर षुक्ल के पास अल्मोडा में उनकी मृत्यू हुई ।

षुक्लजी का बचपन अंतरौली गॉव में बिता लेखक का बचपन गरीबो में बिता । लेखक स्वयं कहते है कि, "बचपन से लेकर सन 1948 तक जब मुझे विपन्नता के कारण एम. ए. और कानून की पढाई छोडनी पडी। गरीबी और षिक्षा तथा साहित्य के प्रति अदम्य आग्रह उन तत्वो के द्वारा मेरे व्यक्तित्व का संस्कार होता रहा।'' 1 गॉव में जमीनदारी व्यवसाय के कारण अलग–अलग जातीयों की अपनी परम्पपराएँ और तौर तरीके थे । पक्के रस्ते, गंदी गलियॉं एक भी पक्के मकान नही थे लेखक का बचपन अपने 2 भाईयों तथा दो बहनों के साथ बिता।

श्रीलाल षुक्ल की प्रारंभीक षिक्षा पास के कस्बे मोहनलाल गंज में हुई । उनका बचपन अभावग्रस्त, मेहनत, चिंताओं से भरा विद्यार्थी जीवन था । उन्होंने लखनऊ के मिडिल मोहनलाल गंज हायस्कूल से कि तो कॉलेज कानकुब्ज लखनउ से किया । 1945 में इंटरमिडिएट परिक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने अलाहाबाद विष्वविद्यालय में बी.ए. दाखिल लिया। बी.ए. ऑनर्स के बाद उन्होंने लखनऊ विष्वविद्यालय एम.ए. प्राचीन भारतीय इतिहास में किया था । कानून की परिक्षाओं में प्रवेष लिया, पर पढाई गरीबी के कारण चल न सकी ।

षुक्लजी ने बी.ए. के बाद कान्यकुब्ज वोकेषनल इंटर कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। उनके बाद 1949 में स्टेट सिव्हील सर्व्हीस में चुन लिए गए। बाद में आय.ए.एस. में पदोन्नती मिली। श्रीलालजी मेहनत, और ईमानदारी षीर्घ निर्णय तथा प्रॅक्टीकल प्रयोग के कारण प्रषासन में उनका नाम था । उनका दबदबा था । हाजिरी बजाना स्वभाव में नही था काम ही उनकी हाजिरी थी, वही दरबार था, वही खुषामद थी । इस तरह प्रषासन में उन्होंने विषेश सेवा की ा

1973 से आय.ए.एस. में पदोन्नती विषेश सचिव की चिकित्सा एवं स्वास्थ के पद, अधिकारी स्तर पर वे वित्त और सहकारीता मंत्रालयों में संबंधीत थे । कुछ वर्शो तक उन्होंने इलाहाबाद में एडमिनिस्ट्रेटर के रूप में कार्य किया और 30 जून 1983 को सेवामुक्त हुये । वे साहित्य और प्रषासन दोनो के प्रति समर्पित और निश्ठावान रहे है । उन्होंने अपनी सरकारी सेवा का प्राप्त अनुभव साहित्य सर्जना में भी किया ।

श्रीलाल षुक्लजी का विवाह 1948 में कानपुर के सुसंस्कृत परिवार की कन्या गिरिजा जी से हुआ । उन्होंने अपने परिवार से अध्याधिक लगाव था, वे पत्नी और बच्चो के प्रति पूरी तरह समर्पित थे । वे कानपुर में इंदिरा नगर रहते थे । रेखा, मधूलिका, विनीता यह तीन पुत्रियॉं तथा एक पुत्र आषुतोश था । सभी सुख संपन्न जीवन व्यतीत करते थे । पत्नी गिरिजा को पक्षाघात की बीमारी हुई छ:वर्श तक उनके जिंदगी में उतार–चढाव आते रहे । छ:वर्श तक श्रीलाल षुक्लाजी ने बडी आत्मीयता से उनकी सेवा की । उस समर्पित सेवा के बावजूद वो फरवरी 1997 में चल बसी। इस गहराई में षुक्लाजी को झकझोर किया। वह पत्नी के लिए पती, प्रेमी और एक अच्छे दोस्त थे।

उनके बाद में रवीन्द वर्मा जी कहते है "जो लोग श्रीलाल जी को जानते है और उनके उपन्यास 'मकान' के सितारवादक नायक नारायण को पहचानते है, वे षायद मुझसे सहमत होने की सम्भवतः नारायण उनके सर्जक का ही एक प्रतिरूप है जो अपनी प्रेमिकाओं के बीच भटकता हुआ, दुसरे षहर में रह रहे अपने परिवार के लिए बिसूरता है और रेडियों स्टेशन पर जब अपना टेप सुनता है तो अपने सितार वादन के चरम पर कहता है कि मैं यही हूँ।" 2

साहित्य स्नेही में केषवचंद वर्मा, धर्मवीर भारती, विजयदेव नारायण साही, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना, गिरीधर गोपाल, जगदीष गुप्त आदी थे । श्रीलाल जी कहते है "पर मेरी स्थिती बहुत हद तक तटवर्ती रही, वहॉं मैं प्रॅक्टिसिंग साहित्यकार न था। "3 अन्य मित्रो में सच्चिदानंद हिरानंद वात्सत्यायन अज्ञेय कवि धूमिल, विद्यानिवास मिश्र, रवीन्द, कालिया, रवीन्द वर्मा, कृश्ण राघव, षीला संधू, ममता कालिया आदी मित्र थे । श्रीलाल बचपने से ही परिश्रमी, कुषाग्रबुध्दी तथा सााहित्यीक रूपी के थे । श्रीलाल में बचपन से ही सृजन के बीच विद्यमान थे, जिन्हे गांव के साहित्यीक माहौल में पनपने का अवसर मिला । उम्र की 12–13 वर्श की अवस्था में उन्होंने धनाक्षरी–सवैये लिखना प्रारंभ किया था ।

श्रीलाल सम्मेलनों में भी जाते थे। उन्होंने परिवार के कुछ बूजुर्ग लेखको की नक्कल करते हुए बचपन से लिखना प्रारंभ किया था " चौदह–पन्द्रह की उम्र में एक महाकाव्य दो लघु उपन्यास, कुछ नाटक और कहानियॉं भी लिखी थी, नये लेखको को सिखाने के लिए उपन्यास – लेखक की कला पर एक ग्रंथ भी षुरु किया था, पर वह दो अध्यायों के बाद भी बैठ गया ।"4

षिक्षा काल में दो उपन्यास लिखे। कवि सम्मेलनों से उन्हे घर खर्च चलाने के लिए रूपया मिलने लगा । उन्होंने रेडिओ नाटक की रूमानियत और अवास्तविकता में खिलाफ स्वर्णग्राम और वर्शा नाम की यथार्थ परक व्यंगपूर्ण रचना लिखी। श्रीलाल जी का साहित्य राश्ट्रवाणी, ज्ञानोदय, धर्मयुग जैसी पत्र–पत्रिकाओं में छपता था । श्रीलाल जी को साहित्य से लेखक को सद्‌भाव् और प्रोत्साहन मिलता था । अपने उदिश्ट् को स्पश्ट करते हुये वह कहते है "लेखन मेरे लिए अपनी गहनतम संभावनाओं के अन्वेशण का माध्यम है वह मेरे लिए मुक्ति की एक प्रक्रीया है, बंधे होने की जो छटपटाहट मेरे लेखन की प्रेरक षक्ति है, वही मेरे रोजमर्या की आदतों और सामाजिक प्रवृत्तीयों का भी एक निरूपण कहता है ।"5

श्रीलाल षुक्ल जी साहित्य यात्रा 1953 से प्रारंभ हुई 'रागदरबारी' जैसे कालावधी रचना में हिंदी के वरीश्ठ और विषिश्ट कथाकार उनको बना दिया । उनकी कलम से निस्संग व्यंग्यात्मकता से समकालीन सामाजिक यथार्थ परक उघडती है ।

सुनी धारी का सुरज (1957) अंगद का बाव (1958), अज्ञातवास (1962), रागदरबारी (1968) यहॉं से वहॉं हास्यव्यंग (1969) आदमी का जहर (1972), सीमाएँ टूटती है (1973), मकान (1976), मेरी भोळ व्यंग रचनाएँ (1979), यह घर मेरा नही – कहानियॉं तथा विविध सामुग्री (1979), पहला पडाव (1987), रेडिओ वार्तालोचन (1993), संजय और विजय बाल साहित्य (1994), अमृतलाल नागर (जीवनी) (1994), बिरमामपुर का संत (1998) अज्ञेय (आलोचना) (1999) इसकी साथ ही उन्होंने पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा रागदरबारी और पहला पडाव के अंग्रजी अनुवाद प्रकाषीत किया ।

समारोप– ;ब्वदबसनेपवदद्ध बीसवी सदी की उत्तरार्ध के हिंदी कथाकारो में श्रीलाल षुक्ल महत्वपूर्ण माने जाते है । उनका निधन 28 अक्तूबर 2011 में हुआ । श्रीलाल षुक्लजी को उनके दस उपन्यास, चार कहानीसंग्रह, व व्यंग्य रचनॉए, 2 विनिबंध, एक आलोचना पुस्तक आदि. उनकी किर्ति को हमेषा चिरंतर बनाए रखेगे। 'रागदरबारी' का पन्द्रह भ. ारतीय भाशाओके अतिरिक्त अंग्रेजी मे भी अनुवाद किया है उनका यह आखिरी उपन्यास है उन्होने हिन्दी साहित्य को कुल मिलाकर 25 रचनाएँ दी। उनकी मृत्यू 19 अक्तूंबर 2011 को हुई। श्रीलाल षुक्ल एक सिविल में उच्चपदस्थ व्यक्ती होने के बावजूद साहित्य मे वे एक अविस्मरणीय अश्टपैलू व्यक्तिमत्व है।

लिखने की मर्यादा के अभाव से साहित्य कम दिया है ा उनका साहित्य विषाल समृध्द है ।

REFERENCE

1) कोटमे–;1999द्ध ''यह घर मेरा नही'' –कानपुर प्रकाशन, नई दिल्ली – पृष्ठ संख्या–113 द्य 2) तदभव् – मार्च 1999 पृष्ठ संख्या–112 द्य 3) श्रीलाल शुक्ल–;1987द्ध रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन कानपुर प्रकाशन, द्य नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–36 द्य 4) तदभव् पृ. 77 रविन्द कालिया के अनुसार द्य 5) यह घर मेरा नही पृष्ठ संख्या–115 द्य 6) श्रीलाल शुक्ल–;2005द्ध अगली शताब्दी का शहर।